खुल कर पूर्ण आकार लेता है । फोल्डेबल आई. ओ. एल. से दृष्टि जल्दी आ जाती है, आँख में कम रियाक्शन होते है और ऑपरेशन पश्चात होने वाली सफेद झिल्ली (PCO) कम होती है ।

एमजीएम इंस्टीट्यूट में मोतियाबिंद की सर्जरी पूरी तरह कीटाणुरहित वातावरण में स्टील ऑपरेशन रूम के अन्दर अत्याधुनिक तकनीक, उपकरणों एवं मशीनों द्वारा की जाती है।

अत्याधुनिक स्टील थियेटर, सीमलेस एवं एन्टी स्टेटिक फर्श लेमिनर फ्लो एवं हेपा फिल्टर द्वारा हवा का नियंत्रण ।

ऑपरेशन के उपकरण स्टेरिलाईजेशन द्वारा जीवाणु रहित किया जाता है ।

सूक्ष्म उपकरणों को अल्ट्रासोनिक क्लीनर से साफ किया जाता है ।

प्रत्येक ऑपरेशन के बाद कक्ष को डिसइनफेक्ट किया जाता है एवं उपकरणों को हाई-स्पीड स्टेरिलाईजर से जीवाणु रहित किया जाता है ।

लोकल एनेस्थिसिया में ऑपरेशन दौरान मरीजों का लगातार निरीक्षण ।

नियमित ऑपरेशन कक्ष की फ्यूमिगेशन एवं माइक्रोबायोलॉजीकल निरीक्षण ।

सर्जरी के बाद आपको डाक्टर के बताये अनुसार आई-ड्रॉप्स डालते रहना होगा और नियमित जाँच के लिए आना होगा । ऑपरेशन के बाद पढ़ने के लिए चश्मा लगाना पढ़ता है और कभी-कभी दूरी के लिए भी थोड़ा बहुत नम्बर दिया जाता है ।

आधुनिक मोतियाबिंद का उपचार सफलतम सर्जरी में से एक है । लेकिन यह जानना भी जरूरी है कि सर्जरी के दौरान या इसके बाद तकलीफ हो सकती है जिससे नजर कम हो सकती है । इसलिए ऑपरेशन पूर्व दूसरी बीमारियों जैसे डायबेटीज़ या उच्च रक्तचाप पर नियंत्रण आवश्यक है । यदि आपको मोतियाबिंद सर्जरी पश्चात किसी तरह की थोड़ी भी परेशानी होती है तो डॉक्टर से तुरंत सम्पर्क करें ।

क्या ऑपरेशन के बाद मोतियाबिंद दुबारा हो सकता है ?

आई.ओ.एल. एक पारदर्शी झिल्ली में रखा जाता है जो प्राकृतिक लेन्स का एक हिस्सा होता है । कभी-कभी इस झिल्ली में दुबारा सफेदी या धुंधलापन (PCO) आ जाता है और नजर में कमी हो जाती है । ऐसी स्थिति होने पर याग (YAG) लेजर द्वारा इसे कुछ क्षणों में दुबारा साफ कर दिया जाता है । लेजर के लिए ऑपरेशन कक्ष या भर्ती होने की जरूरत नहीं होती है ।

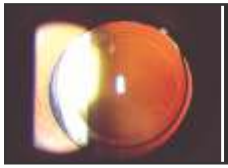

आई.ओ.एल के पीछे पारदर्शी झिल्ली

आई.ओ.एल के पीछे अपारदर्शी झिल्ली (PCO)

याग लेजर पद्धति द्वारा PCO की इलाज

MGM Eye Institute
5th Mile, Vidhan Sabha Road, Raipur (C.G.) 493111
Ph : 0771 2970670, 71, 72
Web Site: www.mgmeye.org

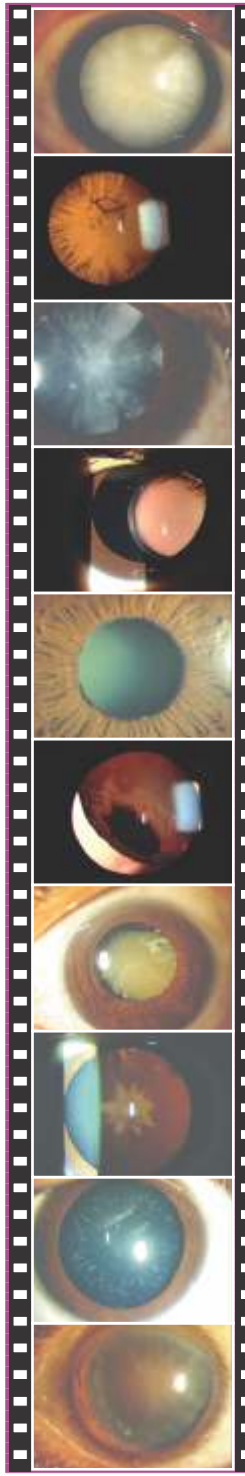

मोतियाबिंद के उपचार

अंधेरे से अंजोर की ओर

MGM
Celebrating 10 Years

मोतियाबिंद क्या है ?

भारत में मोतियाबिंद दृष्टिहीनता का प्रमुख कारण है । हमारा प्राकृतिक लेन्स पारदर्शी होता है। इस लेन्स में धुंधलापन आने पर उसे मोतियाबिंद कहते हैं । लेन्स के पारदर्शी होने पर प्रकाश इससे आसानी से पार हो जाता है, लेकिन जब इसमें धुंधलापन आ जाता है तब प्रकाश की किरणें लेन्स को पार नही कर पाती । इससे नजर में कमी आ जाती है ।

मोतियाबिंद के क्या लक्षण है ?

- नजर में कमी / धुंधलापन
- चश्मे के नम्बर में लगातार बदलाव
- नजर का चकाचौंध होना
- रात में कम दिखना
- एक आँख से दो-दो नज़र आना
- पढ़ने के लिए तेज रोशनी की जरूरत होना

मोतियाबिंद क्यों होता है ?

मोतियाबिंद का मुख्य कारण बढ़ती उम्र है । अन्य कारण - जन्मजात मोतियाबिंद , अनुवांशिक कारण, डायबेटीज़ (मधुमेह)जैसे बीमारियाँ, आँखों में चोट पहुँचना, दवाई का उपयोग विशेषकर स्टेरॉयड्स , आँखों पर सूर्य की यू.वी. रोशनी का प्रभाव और आँखों की बीमारियाँ या कोई शल्य चिकित्सा (सर्जरी)।

मोतियाबिंद का उपचार किस तरह होता है ?

मोतियाबिंद का एकमात्र इलाज सर्जरी है। धुंधले हो चुके लेन्स को सर्जरी द्वारा निकाला जाता है और उसकी जगह एक कृत्रिम लेन्स जिसे इन्ट्रा ऑक्युलर लेन्स (आई. ओ. एल.) कहते है, डाला जाता है ।

कोई भी दवा, आईड्रॉप्स, विशेष आहार या व्यायाम मोतियाबिंद से बचाव या होने पर उसपर रोक थाम नहीं कर सकता ।

मोतियाबिंद की सर्जरी कब करायें ?

जब मोतियाबिंद के कारण नजर इतनी कम हो जाए कि आपको अपनी दिनचर्या में असुविधा होने लगे तब सर्जरी करा लेना चाहिए । पुरानी सर्जरी तकनीकों में मोतियाबिंद का परिपक्व होना या पकना जरूरी था । आजकल नयी तकनीकों में इसकी कोई जरूरत नहीं है बल्कि पकने से सर्जरी और कठिन हो सकती है ।

मोतियाबिंद सर्जरी किन तरीकों से की जा सकती है ?

एम जी एम में मोतियाबिंद का उपचार आधुनिक एवं अत्यंत सुरक्षित तरीके से किया जाता है । सर्जरी के पहले आई. ओ. एल. का नम्बर निकाला जाता है एवं सम्पूर्ण मेडिकल चैक-अप किया जाता है ।

मुख्यरूप से सर्जरी तीन प्रकार की होती है ।

1. **फेकोइमल्सिफिकेशन द्वारा:** यह सबसे आधुनिक तकनीक है । आँख के किनारे एक छोटा चीरा बनाकर इसमें एक विशेष तरह की नली डालकर अल्ट्रासाउण्ड एनर्जी द्वारा लेन्स को छोटे टुकड़ों में तोड़कर उसी नली से बाहर निकाला जाता है । इसमें टाँके की जरूरत नहीं होती ।

2. **छोटे चीरे द्वारा मोतियाबिंद सर्जरी :** इस तकनीक में फेकोइमल्सिफिकेशन के चीरे से थोड़ा बड़ा चीरा बनाकर लेन्स को बिना तोड़े निकाला जाता है । इस में भी टाँके नहीं लगाए जाते ।
3. **एक्स्ट्रा कैप्सुलर कैटरेक्ट :** इस पद्धति द्वारा आँख के किनारे एक बड़ा चीरा लगाया जाता है और उसके किनारे दबाव बनाकर लेन्स बाहर निकाला जाता है । इसमें चीरे को बन्द करने के लिए टाँके की जरूरत होती है ।

मोतियाबिंद ऑपरेशन का चीरे का आकार

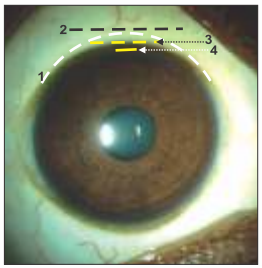

1. एक्स्ट्रा कैप्सुलर केटरक्ट सर्जरी (टाँके सहित) (ECCE)
2. छोटे चीरे द्वारा मोतियाबिंद सर्जरी (टाँके रहित) (SICS)
3. फेकोइमल्सिफिकेशन (टाँके रहित) (Phacoemulsification)
4. फेकोइमल्सिफिकेशन + फोल्डेबल आई ओ एल (टाँके रहित)

मोतियाबिंद निकालने के पश्चात् ही आई. ओ. एल. प्रत्यारोपित किया जाता है । यह प्राकृतिक लेन्स की तरह कार्य करता है । आई. ओ. एल. नॉन-फोल्डेबल एवं फोल्डबल होता है। फोल्डेबल लेन्स एक्रिलिक या हाइड्रोफिलिक पदार्थ से बनाया जाता है जो आँख में कम रिऐक्शन करता है। इसे मोड़कर छोटे से छोटे चीरें द्वारा आँख के भीतर डाला जाता है जहाँ वह दुबारा